जोसेफ मैकविकर

प्ले-डोह के आविष्कारक

ली स्लेटर

विषयवस्तु

व्यवसायी परिवार में जन्म

एक जिज्ञासु बच्चा

बढ़ती मुश्किलें

ज़िंदगी चलती रहती है

एक पारिवारिक किंवदंती

एक बड़ा विचार

उज्ज्वल नाम, उज्ज्वल भविष्य

उत्पाद को सही "प्लेस" करना

प्ले-डोह रेसिपी

रोज़ी-रोटी और पेटेंट

सफलता का स्वरूप

प्ले-डोह के बाद का जीवन

समयरेखा

अध्याय 1

व्यवसायी परिवार में जन्म

जोसेफ मैकविकर का जन्म 9 सितंबर 1930 को सिनसिनाटी, ओहियो में हुआ था.

उनके पिता, क्लियोफस "क्लियो" मैकविकर, स्कॉटिश आप्रवासियों के एक परिवार से थे, जोसेफ की मां इरमा भी एक आप्रवासी थीं. जब वो छह साल की थीं, तब वो ऑस्ट्रिया छोड़कर अमेरिका चली गईं.

क्लियो मैकविकर और उनके भाई नूह मैकविकर "कुटोल प्रोडक्ट्स" नाम की एक कंपनी चलाते थे. कंपनी, साबुन और अन्य सफाई सामग्री बनाती थी. नूह प्लांट मैनेजर और उत्पाद डेवलपर थे. क्लियो बिक्री पर अपन ध्यान केंद्रित करते थे.

1928 में, क्लियो और इरमा की एक बेटी, रूथ हुई. उस समय उनका पारिवारिक व्यवसाय अच्छा चल रहा था. लेकिन जब दो साल बाद जोसेफ का जन्म हुआ, तो कई कंपनियों ने साबुन बनाने के व्यवसाय में प्रवेश किया, जिससे प्रतिस्पर्धा बहुत कड़ी हो गई.

इरमा मैकविकर अपने बच्चों जोसेफ (बाएं) और रूथ (दाएं) के साथ.

फिर युवा जोसेफ भी अपने पारिवारिक व्यवसाय में शामिल हो गए. बदलती अर्थव्यवस्था के कारण कंपनी की बिक्री घट गई थी. लेकिन जोसेफ एक नया उत्पाद लांच करने का विचार कर रहे थे था जो उनके व्यवसाय को पहले से कहीं अधिक सफल बना देगा. वो उत्पाद विश्व प्रसिद्ध खिलौना **प्ले-डोह** था!

अध्याय दो

एक जिज्ञासु बच्चा

बचपन में जोसेफ रचनात्मक और अंतर्मुखी थे. वो तमाम प्रश्न पूछते थे और अपने आस-पास की दुनिया को समझना चाहते थे. जोसेफ अपने शुरुआती दिनों से ही लोगों, जीवन और आध्यात्मिकता के बारे में सोचते थे. उन्होंने संगीत सुनने और पढ़ने में भी बहुत समय बिताया.

जोसेफ की माँ अपने बेटे के शांत, कलात्मक स्वभाव को समझती थीं. परन्तु जोसेफ के पिता को वो अच्छा नहीं लगता था. क्लियो खेलों में सक्रिय थे. जोसेफ को खेल खेलने से ज्यादा पढ़ने में रुचि थी. लेकिन उन्होंने गोल्फ खेलना अपने पिता से सीखा, जो एक उत्कृष्ट गोल्फर थे.

अपने मतभेदों के बावजूद, जोसेफ (दाएं) ने अपने पिता की स्वीकृति हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत की.

जोसेफ़, कल्वर मिलिट्री अकादमी की वर्दी में. स्कूल में अनुशासन और नेतृत्व पर जोर था.

1944 में प्राथमिक विद्यालय पूरा करने के बाद, जोसेफ बोर्डिंग स्कूल चले गए, उन्होंने चार साल तक कल्वर, इंडियाना में कल्वर मिलिट्री अकादमी में पढ़ाई की. जोसेफ के लिए सैन्य जीवन काफी कठिन था. वो उनकी रचनात्मक प्रकृति के अनुकूल नहीं था. शिक्षकों ने उन्हें बाएं हाथ का होने के कारण सजा दी. उस समय बाएं हाथ का होना एक दोष के रूप में देखा जाता था. लेकिन जोसेफ चाहते थे कि उनके माता-पिता उन पर गर्व करें. इसलिए उन्होंने अपने जुनून को दबाकर रखा, बहुत मेहनत की और अच्छा प्रदर्शन किया.

अध्याय 3

बढ़ती मुश्किलें

18 साल की उम्र में, जोसेफ ने रोड आइलैंड के प्रोविडेंस में ब्राउन यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया. वो अपने परिवार में कॉलेज जाने वाले पहले व्यक्ति थे. वहां उन्हें उन चीज़ों का अध्ययन करने का मौका मिला जिनमें उनकी रुचि थी!

जोसेफ ने थिएटर, कविता और साहित्य पढ़ा. वो अभी भी आध्यात्मिक विचारों में रुचि रखते थे. वो जीवन का "अर्थ" जैसे बड़े सवालों के जवाब खोजना चाहते थे.

द्वितीय वर्ष के दौरान, जोसेफ ने केंटुकी में एक सप्ताहांत कार्यशाला के बारे में सुना. थॉमस मर्टन, एक विद्वान और पुजारी, कार्यशाला में पढ़ाने वाले थे. जोसेफ वहां जाने की सोच रहे थे. लेकिन उनके पिता पहले उनसे उसके बारे में चर्चा करना चाहते थे.

क्लियो एक पायलट थे और उनका अपना खुद का विमान था. उन्होंने जोसेफ से मिलने के लिए सिनसिनाटी से उड़ान भरी. लेकिन वो पहुँच नहीं पाए. उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और 3 नवंबर, 1949 को उनकी मृत्यु हो गई.

क्लियो की मृत्यु के बाद जोसेफ की मां इरमा को कुटोल उत्पाद विरासत में मिला. माँ ने नूह के साथ काम करना जारी रखा. उन्होंने बिल रोडेनबॉघ को भी काम पर रखा.

जोसेफ ने अमेरिका के सर्वोच्च रैंकिंग वाले कॉलेजों में से एक में दाखिला लिया.

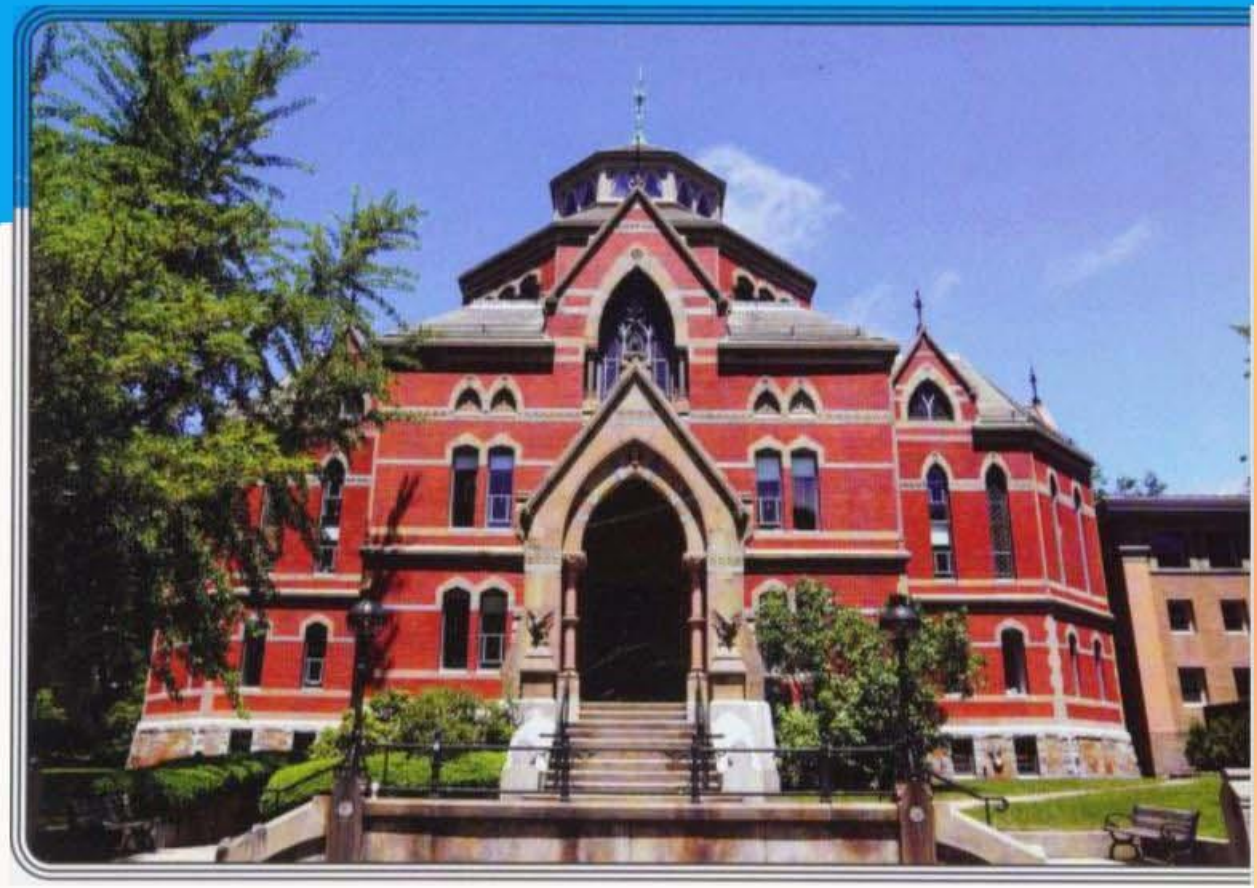

रोडेनबॉघ का विवाह इरमा की बेटी रूथ से हुआ था. इसलिए, व्यवसाय परिवार में ही रहा.

अध्याय 4

ज़िंदगी चलती रहती है

क्लियो की मृत्यु परिवार और कंपनी दोनों के लिए एक भयानक क्षति थी. जोसेफ का दिल टूट गया और वो कई महीनों तक दुखी रहे. लेकिन जब वो कॉलेज लौटे तो उन्हें आज़ादी का एक नया अहसास हुआ. जोसेफ को अब अपने पिता की स्वीकृति नहीं लेनी थी. वो अब अपने तय किए रास्ते पर चल सकते थे.

शेक्सपियर का कोर्स करते समय जोसेफ की मुलाकात हैरियट श्मिट से हुई. उनकी शादी 20 दिसंबर 1951 को हुई. अगले वसंत में, उन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की और सिनसिनाटी चले गए. उनके पहले बच्चे का जन्म 30 नवंबर 1952 को हुआ था. जोसेफ और हैरियट ने उसका नाम जूलियट रखा.

अच्छी खबर ज्यादा देर तक नहीं टिकी. जूलियट के जन्म के एक महीने बाद, जोसेफ को एक दुर्लभ प्रकार के कैंसर का पता चला, जोसेफ और हैरियट विशेषज्ञ डॉक्टरों से मिलने के लिए न्यूयॉर्क शहर गए. जोसेफ का ऑपरेशन करीब आठ घंटे तक चला. डॉक्टरों ने कैंसर को निकाला, लेकिन वे उसे पूरी तरह हटा नहीं पाए.

डॉक्टरों ने अनुमान लगाया कि जोसेफ के पास जीवित रहने के लिए केवल दो महीने ही बाकी थे इसलिए उसे वापस घर भेज दिया गया. जोसेफ ने एक जोखिम भरी विकिरण-चिकित्सा आज़माने का फैसला किया, उससे वो गंभीर रूप से जल गए, लेकिन चिकित्सा ने काम किया और जोसेफ जीवित बच गए.

जोसेफ और हैरियट दोनों ने ब्राउन यूनिवर्सिटी की संगीत प्रस्तुतियों में प्रदर्शन किया.

अध्याय 5

एक पारिवारिक किंवदंती

जब जोसेफ अपनी बीमारी से उबर रहे थे, तब उन्होंने पारिवारिक धंधे में शामिल होने पर विचार किया. व्यवसाय का सबसे अधिक बिकने वाला उत्पाद की अब मांग नहीं थी और कंपनी संकट में थी. 1933 में इसी उत्पाद ने कंपनी को बचाया था.

1930 के दशक में लोग अपने घरों को कोयले से गर्म करते थे. धुंआ उनकी दीवारों पर कालिख छोड़ देता था. क्रोगर फूड्स, एक बड़ी जनरल स्टोर श्रृंखला, एक उत्कृष्ट दीवार-सफाई वाला उत्पाद चाहती थी. क्लियो ने उन्हें कुटोल प्रोडक्ट्स को, एक बड़ा ऑर्डर देने के लिए मना लिया. लेकिन उत्पाद अभी तक अस्तित्व में नहीं था!

नूह को आविष्कार करने का काम मिल गया. जल्द ही उसने दीवारों की सफ़ाई के लिए एक बढ़िया उत्पाद बनाया. उसने उसे कुटोल वॉल क्लीनर नाम दिया. क्लीनर, मिट्टी की तरह गाढ़ा था और वॉलपेपर को नुकसान नहीं पहुँचाता था. उसकी मुख्य सामग्रियां पानी, नमक और आटा थीं.

क्रोगर कंपनी का बड़ा ऑर्डर समय पर पहुंच गया. क्रोगर अधिकारियों को उत्पाद इतना पसंद आया कि उन्होंने तुरंत उसकी हज़ारों पेटियाँ ऑर्डर दे डाला! क्लियो की निर्भीकता और नोआ की रचनात्मकता ने कंपनी को विफलता से बचा लिया. मैकविकर परिवार ने बड़ी वित्तीय सफलता के कारण आनंद महसूस किया.

आज भी हम कोयला जलाते हैं. लेकिन अब हम यह जानते हैं कि धुआं, ग्लोबल वार्मिंग में योगदान देता है. इसलिए, कानून धुएं को स्वच्छ बनाने के लिए उसे नियंत्रित करता है.

हालाँकि, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, हीटिंग ईंधन के रूप में कोयले की जगह, प्राकृतिक गैस और तेल ने ले ली. इन नये ईंधनों ने दीवारों पर कालिख नहीं छोड़ी. जोसेफ के कंपनी में शामिल होने से पहले, कुटोल वॉल क्लीनर की बिक्री काफी गिर गई और मुनाफा कम हो गया. अब जोसेफ के पास उसका कोई समाधान निकालने का मौका था.

अध्याय 6

एक बड़ा विचार

प्ले-डोह का पहला विचार एक कक्षा से आया. जोसेफ की भाभी, कुफ़ल, एक स्कूल शिक्षिका थीं. उन्होंने जोसेफ को बताया कि कुटोल वॉल क्लीनर से उन्होंने बेहतरीन "मॉडलिंग क्ले" बनाई थी!

कुफ़ल ने एक पत्रिका का लेख पढ़ा था जिसमें कक्षा में, दीवार क्लीनर का उपयोग करके "मॉडलिंग क्ले" बनाने का सुझाव दिया गया था. कुफ़ल के छात्रों ने उस नरम, लचीली सामग्री से छुट्टियों में आभूषण बनाए. मिट्टी के सख्त होने के बाद, छात्रों ने आभूषणों को पेन्ट किया. वो एक मज़ेदार और सफल कला प्रोजेक्ट था. अन्य शिक्षकों ने भी अपनी कक्षाओं में उस मिट्टी यानि "मॉडलिंग क्ले" का उपयोग किया.

कुफ़ल की कहानी ने जोसेफ को सोचने के लिए एक नया विचार दिया. क्या वो अपने परिवार के दीवार क्लीनर को खिलौने के रूप में बेच सकता था? जूलियट मैकविकर ने अपने पिता को "बॉक्स से हटकर सोचने वाला सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति" बताया.

इससे पहले कि जोसेफ अपने विचार को क्रियान्वित कर सकें, उन्हें बाज़ार की रिसर्च करनी पड़ी. उन्होंने सिनसिनाटी क्षेत्र के आसपास के विभिन्न स्कूलों में "मॉडलिंग क्ले" का परीक्षण किया. बच्चों और शिक्षकों को वो बहुत पसंद आया!

छात्र आज भी, कक्षा में प्ले-डोह का उपयोग करने का आनंद लेते हैं

जोसेफ जानता था कि माता-पिता को भी वो "मॉडलिंग क्ले" पसंद आएगी. उससे फर्नीचर या फर्श जैसी सतहों पर दाग नहीं पड़ता था. वो चिपचिपा या टेढ़ा-मेढ़ा भी नहीं था. और क्योंकि वो गैर-विषैला था, इसलिए बच्चों को उससे कोई नुकसान नहीं होगा. कुटोल वॉल क्लीनर जल्द ही एक खिलौना बनने वाला था!

अध्याय 7

उज्ज्वल नाम, उज्ज्वल भविष्य

जोसेफ अपने दीवार क्लीनर को सबसे अधिक बिकने वाले खिलौने में बदलने के लिए दृढ़ संकल्प थे. लेकिन इस सपने को हकीकत में बदलने के लिए उन्हें मदद की जरूरत थी. इसलिए उन्होंने नूह और रोडेनबॉघ को अपना व्यापारिक साझीदार बनाया. नूह ने दीवार क्लीनर फॉर्मूला में कुछ अन्य चीज़ मिलाकर उसकी गंध को बेहतर किया. अब उत्पाद को केवल एक अच्छे नाम की आवश्यकता थी!

जोसेफ ने मूल रूप से "मॉडलिंग क्ले" को, रेनबो मॉडलिंग कंपाउंड नाम दिया था. लेकिन कुफ़ल के अनुसार वो नाम बहुत लंबा और उबाऊ था. जब कुफ़ल के पति, बॉब ने **प्ले-डोह** नाम नाम सोचा, तब वो नाम सबको पसंद आया!

1955 में, जोसेफ ने एक स्कूल के सप्लाई सम्मेलन में प्ले-डोह की शुरुआत की. उन्होंने स्कूलों को थोक में मिट्टी बेचने की योजना बनाई. मिट्टी को बड़े-बड़े कंटेनरों में पैक किया गया.

लेकिन सम्मेलन के बाद, कुटोल प्रोडक्ट्स को एक बहुत बड़ा खुदरा ऑर्डर मिला. वाशिंगटन, डीसी में वुडवर्ड और लोथ्रोप डिपार्टमेंट स्टोर, प्ले-डोह को बेचना चाहता था! इसका मतलब यह था कि माता-पिता अपने बच्चों के लिए घर पर खेलने के लिए प्ले-डोह खरीद सकते थे. इसलिए, कंपनी ने प्ले-डोह को छोटे कंटेनरों में पैकेज करने का निर्णय लिया.

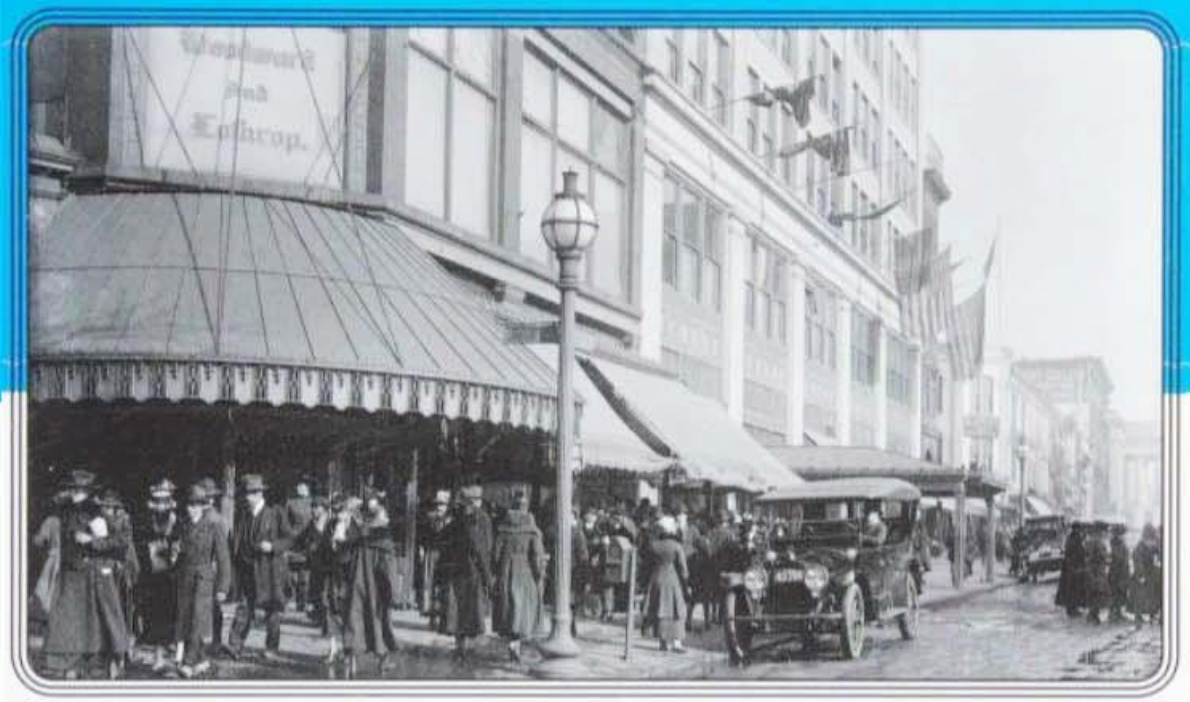

वुडवर्ड और लोथ्रोप पूरे मध्य-अटलांटिक अमेरिका में डिपार्टमेंट स्टोर संचालित करते थे.

1956 में, जोसेफ और नूह ने रेनबो क्राफ्ट्स कंपनी शुरू की. यह नया व्यवसाय कुटोल प्रोडक्ट्स की एक सहायक कंपनी थी. रेनबो क्राफ्ट्स ने प्ले-डोह के सात-औंस (207 मि.ली.) के डिब्बे, तीन के पैक में बेचे. जल्द ही, देश भर से स्टोर ऑर्डर देने लगे. प्ले-डोह देश भर के स्कूलों और घरों में सफल रहा!

अध्याय-8

प्रोडक्ट प्लेसमेंट

1957 से पहले, प्ले-डोह केवल सफेद रंग में उपलब्ध था. जोसेफ को एहसास हुआ कि अगर प्ले-डोह अलग-अलग रंगों में होगा, तो वो और भी मजेदार और आकर्षक होगा. पहले तीन प्ले-डोह के रंग लाल, नीले और पीले थे. बच्चे इन प्राथमिक रंगों को मिलाकर एक संपूर्ण इंद्रधनुष बना सकते हैं!

कंपनी को उपभोक्ताओं को इस नए विकास के बारे में बताने की ज़रूरत थी. लेकिन नई उत्पादन मशीने लगाने में पहले ही काफी खर्चा हो चुका था. रेनबो क्राफ्ट्स के पास विज्ञापनों या पत्रिका विज्ञापनों के लिए कोई पैसा नहीं बचा था. जोसेफ को अपनी बात फैलाने के लिए एक रचनात्मक तरीके की जरूरत थी.

उस समय "कैप्टन कंगारू" बच्चों का सबसे लोकप्रिय शो था. जोसेफ साहस करके सीधे टेलीविजन स्टूडियो और शो के सेट पर गए. उन्होंने कैप्टन कंगारू की भूमिका निभाने वाले बॉब किशन को रंगीन प्ले-डोह दिखाया. किशन को वो बहुत पसंद आया. और वो उसे अपने शो में इस्तेमाल करने को तैयार हो गए!

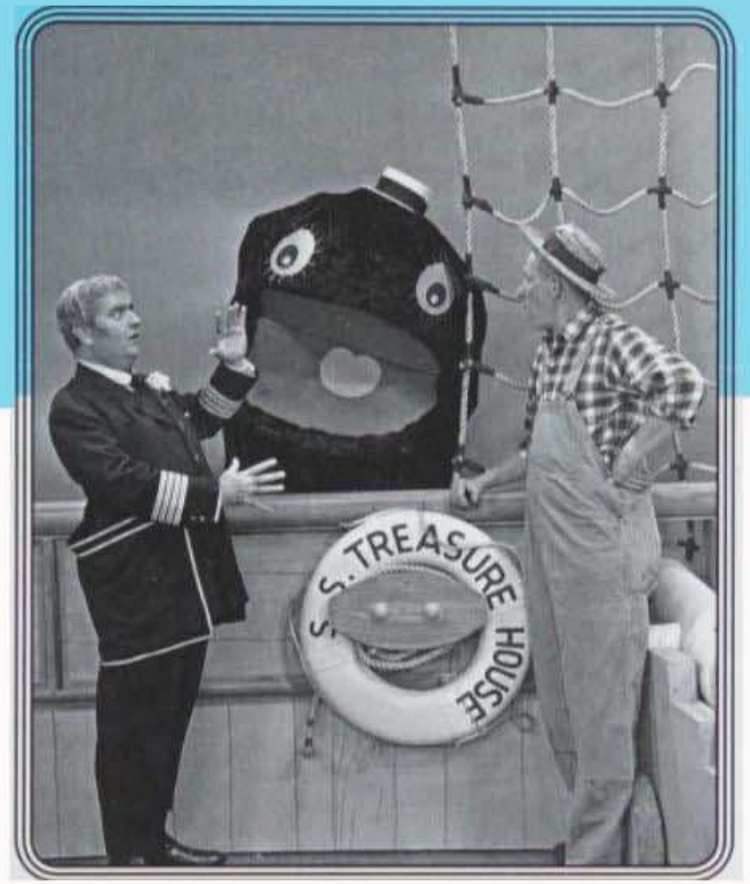

कैप्टन कंगारू (बाएं) और
मिस्टर ग्रीन जोन (दाएं),
कैप्टन कंगारू के पात्र.
शो रिकॉर्ड तोड़
29 वर्षों तक चला.

किसी उत्पाद को फिल्म या टेलीविज़न में दिखाना "प्लेसमेंट" कहलाता है. विज्ञापन का यह प्रभावी रूप आमतौर पर काफी महंगा होता है. लेकिन जोसेफ और किशन ने एक सौदा किया. यदि कैप्टन कंगारू हर सप्ताह प्ले-डोह का उपयोग करता, तो किशन को उसका कमीशन मिलता. जैसे ही देश भर के बच्चों ने नया प्ले-डोह देखा, उसकी बिक्री आसमान छूने लगी. साल के अंत तक जोसेफ करोड़पति बन गए.

अध्याय-9

प्ले-डोह की रेसिपी

आज का प्ले-डोह मूल कुटोल वॉल क्लीनर में पाए जाने वाले समान का ही उपयोग करता है. लेकिन 1957 में, जोसेफ ने उत्पाद को बेहतर बनाने के लिए डॉ. लियू को काम पर रखा. लियू ने उसमें जो अतिरिक्त सामग्री मिलाई वो बच्चों को मिट्टी का बार-बार उपयोग करने देती थी. वो मूल प्ले-डोह जितनी जल्दी कठोर भी नहीं होती थी.

प्ले-डोह बनाना एक सरल प्रक्रिया है. सबसे पहले, बड़े-बड़े मिक्सर, सभी सामग्रियों को एक साथ मिलाते हैं. पानी को लगभग 220 डिग्री फ़ारेनहाइट तक गर्म करके मिश्रण में मिलाया जाता है. आटा गाढ़ा होने तक सामग्री को मिलाया जाता है. इसमें 30 मिनट तक का समय लगता है.

आज प्ले-डोह 45 से अधिक रंगों में उपलब्ध हैं.

प्ले-डोह का नुस्खा

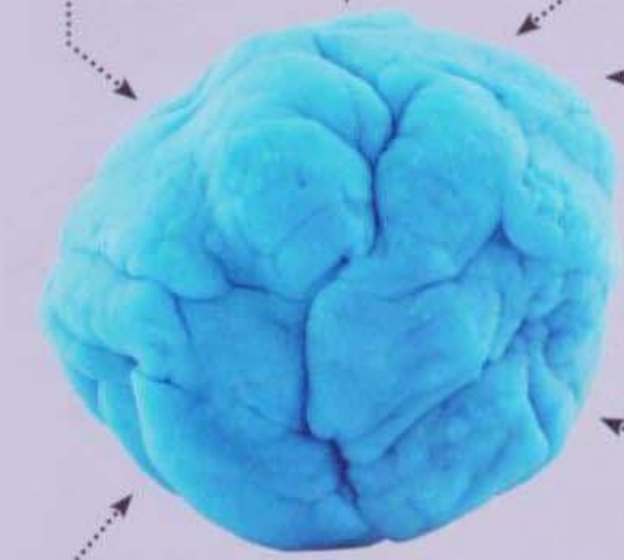

आटा और पानी को पहले एक साथ मिलाया जाता है.

रंग मिलाने से सफ़ेद आटा और अधिक आकर्षक बन जाता है!

मोमी स्टार्च (मांड) आटे को लचीला रखता है.

एल्युमिनियम सल्फेट आटे को सख्त बनाता है. उसका कड़वा स्वाद बच्चों को आटा खाने से रोकता है.

सुगंध के लिए कुछ वेनिला मिलाया जाता है. लेकिन असली सामग्री एक रहस्य है.

खनिज या वनस्पति तेल आटे को नम रखता है. वो आटे को अधिक चिपचिपा होने से भी बचाता है.

नमक अतिरिक्त पानी को सोख लेता है जिससे आटा बहुत नरम या पतला नहीं होता है.

अध्याय-10

रोज़ी-रोटी और पेटेंट

1950 के दशक के अंत और 1960 के दशक की शुरुआत में, जोसेफ और हैरियट के तीन और बच्चे हुए. जैक का जन्म 30 अगस्त 1955 को हुआ. मैरी का जन्म 27 जून 1959 को हुआ. और जो का जन्म 4 जून 1964 को हुआ. मैकविकर के बच्चे प्ले-डोह के साथ खेलते हुए बड़े हुए. उनके दोस्तों और पड़ोसियों ने भी ऐसा ही किया. जूलियट के अनुसार, "जब भी कोई घर में आता था, तब सभी बच्चे मिलकर प्ले-डोह के साथ खेलते थे!"

रेनबो क्राफ्ट्स ने एक त्वरित क्लासिक खिलौना बनाया था. अब उन्हें उसे पेटेंट प्राप्त करने की आवश्यकता थी जिससे प्ले-डोह पर उनके कानूनी अधिकारों की रक्षा हो. पेटेंट किसी को उत्पाद फॉर्मूला चुराने से रोकता. जोसेफ और नूह ने 17 मई, 1960 को एक पेटेंट के लिए आवेदन किया.

पेटेंट दाखिल करने के तुरंत बाद, जोसेफ ने एक बड़ा फैसला लिया. रेनबो क्राफ्ट्स अब अपने दम पर खड़ा होने में काफी सफल हो गया था. अब उसे अपनी मूल कंपनी से अलग होने का समय आ गया था.

मैकविकर बच्चे (बाएं से दाएं). जूलियट, जो, जॉक और मैरी.

जोसेफ और नूह ने रेनबो क्राफ्ट्स और प्ले-डोह को अपने नियंत्रण में लिया. रोडेनबॉघ, कुटोल प्रोडक्ट्स के प्रमुख बने रहे. अलग होने के बावजूद, दोनों कंपनियां अभी भी एक साथ कारोबार करती थीं. कुटोल प्रोडक्ट्स ने सफाई की आपूर्ति करने के साथ-साथ रेनबो क्राफ्ट्स के माल की पैकेजिंग भी की.

अध्याय-11

सफलता का स्वरूप

1964 तक रेनबो क्राफ्ट्स प्रति वर्ष 10 लाख से अधिक प्ले-डोह के डिब्बों की शिपिंग कर रहा था. कंपनी ने प्ले-डोह को इंग्लैंड में निर्यात करना शुरू किया. फ़्रांस, और इटली में भी. अब दुनिया भर के बच्चे प्ले-डोह के साथ खेल रहे थे!

25 जनवरी 1965 को, नूह और जोसेफ को अमेरिकी पेटेंट क्रमांक 3,167,440 से सम्मानित किया गया. प्ले-डोह का फॉर्मूला अब सुरक्षित था. बिक्री मजबूत थी और उसमें हर समय सुधार हो रहा था. अब जब जोसेफ ने एक सफल उत्पाद लॉन्च कर दिया था, तो वो कुछ नया करने के लिए तैयार था.

रेनबो क्राफ्ट्स के बाद जनरल मिल्स ने, कुछ अन्य खिलौना कंपनियाँ खरीदीं. इनमें से एक, केनर प्रोडक्ट्स 1963 में ईज़ी-बेक ओवन बाजार में लाई.

1965 में, उन्होंने रेनबो क्राफ्ट्स को खाद्य निर्माता जनरल मिल्स को बेच दिया. खिलौना उद्योग में यह जनरल मिल्स का पहला अनुभव था. उन्होंने प्ले-डोह ब्रांड और फॉर्मूला के लिए 30 लाख डॉलर का भुगतान किया.

कंपनी बेचने के बाद, जोसेफ ने एक उद्योगपति के जीवन से संन्यास ले लिया. उन्होंने हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में अध्ययन करना शुरू किया. उनकी बेटी जूलियट के अनुसार वो उनके पिता की आजीवन खोज का हिस्सा था. वो अभी भी आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर खोज रहे थे.

अध्याय-12

प्ले-डोह के बाद का जीवन

छपाई के ठप्पे, स्टेंसिल और अन्य सहायक चीज़ें, प्ले-डोह को और भी मज़ेदार बना देते हैं.

जोसेफ ने 13 जून,1968 को हार्वर्ड से स्नातक की उपाधि प्राप्त की. लेकिन उन्हें लगा कि उनकी शिक्षा अभी भी पूरी नहीं हुई थी. जोसेफ को अभी भी जीवन के बड़े प्रश्नों और रहस्यों में दिलचस्पी थी. विश्व धर्मों में उनकी विशेष रुचि थी. स्नातक होने के बाद, उन्होंने अपनी पढ़ाई स्वयं जारी रखने का निर्णय लिया.

जोसेफ ने आध्यात्मिक खोज पर दुनिया भर की यात्रा की. वो यूरोप और एशिया गये. वह जहां भी गए वहां उन्होंने लोगों से चर्चा की और उनसे सीखा. जूलियट ने कहा, "वो बहुत उत्सुक थे और वहां जो कुछ था उसे देखने को तैयार थे."

जोसेफ ने खेलने का एक तरीका तैयार किया जो 60 से अधिक वर्षों तक चला.

जोसेफ 60 वर्ष की आयु तक जीवित रहे. उनकी मृत्यु 2 अप्रैल 1991 को मॉन्टेरी, कैलिफोर्निया में हुई. बीस साल बाद, टाइम पत्रिका ने प्ले-डोह को "आल-टाइम 100 महानतम खिलौनों" की सूची में शामिल किया. दुनिया के सबसे बड़े खिलौना निर्माताओं में से एक, हैस्ब्रो, अब प्ले-डोह ब्रांड का मालिक है. खिलौने के आविष्कार के बाद से अब तक 200-करोड़ से अधिक डिब्बे बेचे जा चुके हैं.

जोसेफ ने अपने जीवनकाल में दुनिया को एक शानदार उपहार दिया. उन्होंने बच्चों को सृजनशील बनने, अन्वेषण और प्रयोग करने का अवसर दिया. इस अवसर के लिए जोसेफ की दूरदर्शिता को धन्यवाद, क्योंकि उन्होंने खेल की दुनिया को एकदम बदल दिया.

समय-रेखा

1927

क्लियोफस और नोआ मैकविकर ने कुटोल प्रोडक्ट्स शुरू किया.

1930

जोसेफ मैकविकर का जन्म 9 सितंबर को सिनसिनाटी, ओहियो में हुआ.

1949

3 नवंबर को एक विमान दुर्घटना में क्लियोफस की मृत्यु हो गई.

1951

जोसेफ मैकविकर और हैरियट श्मिट की शादी 20 दिसंबर को हुई.

1955

जोसेफ ने स्कूलों में कुटोल वॉल क्लीनर का परीक्षण किया.

1956

जोसेफ और नूह ने रेनबो क्राफ्ट्स, कम्पनी शुरू की.

1957

बच्चों के शो "कैप्टन कंगारू" की शुरुआत प्ले-डोह से हुई.

1965

जोसेफ़ ने सेवानिवृत्त होने से पहले जनरल मिल्स को, रेनबो क्राफ्ट्स बेच दिया.

1968

जोसेफ़ 13 जून को हार्वर्ड से स्नातक हुए.

1991

में हैस्ब्रो कम्पनी ने प्ले-डोह ब्रांड खरीदा. जोसेफ की 2 अप्रैल को कैलिफोर्निया के मोंटेरे में मृत्यु हुई.